This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **605**

Unique Paper Code : **205440** **D**

Name of the Paper : **MIL Hindi 'B'**

(आधुनिक भारतीय भाषा हिंदी—ख)

Name of the Course : **B.A. Programme (बी.ए. पाठ्यक्रम)**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की प्रसंगसहित व्याख्या कीजिए : 8

(क) जिस लेखनी ने है लिखा उत्कर्ष भारतवर्ष का,
लिखने चली अब हाल वह उसके अमित अपकर्ष का।
जो कोकिला नन्दन-विपिन में प्रेम से गाती रही,
दावाग्नि-दग्धारण्य में रोने चली है अब वही!

अथवा

पाले हुए पशु-पक्षियों का ध्यान तो रखते सभी,
पर नारियों की दुर्दशा क्या देखते हैं हम कभी ?
हमने स्वयं पशु-वृत्ति का साधन बना डाला उन्हें,
सन्तान-जनने मात्र को वसनान्न दे पाला उन्हें।

P.T.O.

(ख) तुम्हें सारी चीजें याद हैं, तभी तो इतने दुखी हो। मैं कहता हूँ, दुनिया जहन्नुम में जाए, तुमसे क्या ?...मुझसे क्या ? क्या है हमारे अधिकार में ? हमारी क्या ताकत है ? इस ब्रह्माण्ड में हम सूई की नोक का करोड़वाँ हिस्सा भी तो नहीं हैं...हँह...! 7

अथवा

तुमने जो-जो चाहा, वही-वही मैं बनती गई। वही-वही चीजें तुम्हारे चारों ओर आती हुई गईं....यह टूटी मूर्ति यह तस्वीर तुम्हारी ही पसन्द है!....मैं सब कुछ वही करती गई...वही बनती गई...जो तुमने पसन्द किया। यहाँ तक कि कपड़े भी मैंने तुम्हारी ही पसन्द के पहने। मैं तो आज तक कुछ नहीं बोली.....

(ग) उन्हें भय था कि वज्जियों के उस विचित्र कानून के अनुसार उनकी कन्या विवाह से वंचित करके कहीं 'नगरवधू' न बना दी जाए। वज्जी गणतन्त्र में यह विचित्र कानून था कि उस गणराज्य में जो कन्या सर्वाधिक सुन्दरी होती थी वह किसी एक पुरुष की पत्नी न होकर 'नगरवधू' घोषित की जाती थी और उस पर सम्पूर्ण नागरिकों का समान अधिकार रहता था। 8

अथवा

''भन्तेगण सुने, जो संकट आज हमारे सम्मुख है, ऐसा वैशाली पर कभी नहीं आया था। शत्रु को यही छिद्र मिल गया है, कि हमारी सेना और कोष अव्यवस्थित और अपर्याप्त हैं, तभी वह साहस कर रहा है; और यह झूठ भी नहीं है। हमें नियमित राजस्व नहीं मिल रहा है। दुर्ग-प्राकारों और नगर-प्राकारों का भी संस्कार कराना आवश्यक है। परिखा में जल नहीं है और उसमें मिट्टी भर गई है, वे खेत हो रही हैं।

2. 'भारत-भारती' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना की विवेचना कीजिए। 15

अथवा

भारत-भारती' के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'मिस्टर अभिमन्यु' के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक की समीक्षा कीजिए।

4. आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'वैशाली की नगरवधू' के कथानक की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

उपन्यास-कला की दृष्टि से 'वैशाली की नगरवधू' का मूल्यांकन कीजिए।

5. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(क) 'मिस्टर अभिमन्यु' की नाट्यभाषा

(ख) 'भारत-भारती' की काव्य-भाषा

(ग) 'वैशाली की नगरवधू' की कथा-भाषा।